कलीसिया अध्याय 29

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **लूका 15:1-18:17**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स को *पढ़ें*) कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (लूका 15:1-18:17) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]* **(5) नीतिवचन 3:3-4**

दो दो करके *पुनरावलोकन* करें।
(2) विश्वासयोग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3-4। कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हारा बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना। और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]* **व्यक्तिगत सहायता द्वारा नये मसीहियों को प्रशिक्षण दें**

परिचय। यह प्रशिक्षण व्यक्तिगत सहायता द्वारा नये मसीहियों को प्रशिक्षित करने के बारे में हैं। हम एक ऐसा तरीका सिखाएंगे जिसके माध्यम से पुराना विश्वासी नये विश्वासी को बढ़ने में सहायता कर सकता है। ,

क. व्यक्ति सहायता का महत्व

1. व्यक्तिगत सहायता क्या है?

इस अध्ययन में "व्यक्तिगत सहायता" का अर्थ उस सहायता से है जिसके अन्तर्गत एक बुजुर्ग या परिपक्व मसीही(एक प्रशिक्षक या मार्गदर्शक) नये मसीही की सहायता करता है। पुराना मसीही, नये मसीही की आत्मिक रीति में बढ़ने तथा उसकी यीशु मसीह का चेला बनने में सहायता करता है। वह निम्नलिखित क्षेत्रों में सहायता पाता है:

- उसके व्यक्तित्व व ज़रूरतों में सहायता करने के द्वारा

- बाइबल का इस्तेमाल करने के द्वारा
- व्यक्तिगत सम्बन्ध, मसीही प्रेम और देखभाल द्वारा

2. बाइबल में दिये गये व्यक्तिगत सहायता के उदाहरण।

परिचय। हालांकि ये उदाहरण यीशु की व्यक्तिगत सेवाकाई के उदाहरण हैं, लेकिन इनके द्वारा यीशु ने अपने चेलों को अपने उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया। इन उदाहरणों का इस्तेमाल कुछ व्यक्ति सहायता के कुछ क्षेत्रों में हमारे विचारों को उभारने के लिए किया गया है।

(1) एक व्यक्ति की यीशु मसीह पर विश्वास करने में सहायता करने के लिए व्यक्ति तौर पर सहायता करें।

पढ़ें लूका 19:1-10।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह की मुलाकात जब जक्कई से हुई तो उसने क्या किया?

ध्यान दें। यीशु मसीह इस दुनिया में खोये हुए का खोजने और उनका उद्धार करने के लिए आये। जक्कई एक खोया हुआ व्यक्ति था। लेकिन यीशु ने उसे ढूँढ़ लिया। जक्कई प्रमुख चुंगी लेने वाला था। वह लोगों को ठगता और उनसे ज्यादा कर वसूला करता था और इसीलिए वह बहुत अमीर था। जब यीशु उसके शहर में आया,तो जक्कई भी उससे मिलना चाहता था। हालांकि हमें यह पता नहीं है कि वह क्या मिलना चाहता था। हो सकता है कि उसका विवेक उसे लोगों को ठगने की वजह से कचोटता हो। लेकिन यीशु उस कारण को बहुत अच्छी तरह से जानते थे इसलिए उन्होंने उससे उसी के घर में मिलने की पहल की।

उन लोगों की बातचीत के दौरान जकक्ई ने यीशु के सामने अपने पापों को अंगीकार कर दिया, "हे प्रभु देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया हो तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।" उसके बाद यीशु ने उसकी उद्धार पाने में सहायता की और कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है..क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है"। सहायता करने का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आप लोगों की सुसमाचार समझने तथा यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण करने में सहायता करते हैं।

(2) एक व्यक्ति की यीशु से शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करने के लिए व्यक्तिगत तौर पर सहायता करें।

पढ़ें लूका 10:38-42; प्रेरितों 8:2 2 कुरिन्थियों 4:16-18।

खोजें और चर्चा करें। आपके विचार से "वह मुख्य बात क्या है" जिसकी लोगों को जरूरत हैं?

ध्यान दें। "मुख्य बात" जिसकी लोगों को सबसे ज़्यादा ज़रूरत है वह यीशु मसीह के कदमों में बैठकर उससे सीखना है। हमें नहीं पता कि मरियम की व्यक्तिगत जरूरत क्या थी और यीशु ने उसे क्या सिखाया। लेकिन हम यह जानते हैं कि यीशु ने इस घटना को बहुत महत्व दिया। उसने कहा कि मरियम ने जिस व्यक्तिगत सहायता का चुनाव किया वह उसके लिए रोजमर्रा के घरेलू कामों से अधिक महत्वपूर्ण थे। वह सच में ज्यादा महत्वपूर्ण थी,क्योंकि मसीहियों को अपनी दृष्टि प्रत्यक्ष चीज़ों (अस्थायी) पर नहीं वरन अप्रत्यक्ष चीजों (अनन्त चीजों) पर लगानी है।

अत: एक पुराना मसीही किसी नये मसीही को नियमित तौर पर (हर 14 दिनों में एक बार) मिलने के लिए "यीशु के कदमों में बैठकर सीखने के लिए" बुला सकता है। यीशु की शिक्षाएं चार सुसमाचारों में लिखी

गयी हैं: अर्थात मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना। व्यक्ति तौर पर सहायता करने का एक पहलू साथ मिलकर यीशु मसीह की शिक्षाओं का अध्ययन करना और उस पर चर्चा करना है।

(3) एक व्यक्ति के टूटे रिश्तों को बहाल करने के लिए व्यक्तिगत तौर पर सहायता करें।

पढ़ें यूहन्ना 13:37; 21:15-19।

खोजें और चर्चा करें। जब यीशु गलील की झील पर पतरस से मिला तो उसने क्या किया?

ध्यान दें। यीशु ने पतरस से मिलने की पहल की और उसने टूटे रिश्ते हो बहाल किया। यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहले, पतरस ने बड़ी बड़ी डींगे मारी थीं कि वह चाहे मर जाए लेकिन वह कभी भी यीशु का इनकार नहीं करेगा। उसने कहां था कि " मैं तेरे लिए अपनी जान भी दे सकता हूँ।" लेकिन जिस समय यीशु को गिरफ्तार किया गया तब पतरस दूसरे चेलों के साथ यीशु को छोड़कर भाग गया। यीशु पर दोष लगाये जाने के दौरान पतरस ने तीन बाद यीशु और उसके चेलों को पहिचानने से इनकार किया था। पतरस के इस व्यवहार के कारण यीशु और पतरस के रिश्ते में दारार पड़ गयी थी।

यीशु मसीह के मुर्दों में से जी उठने के बाद, यीशु ने पतरस से व्यक्ति तौर पर बातचीत की और कहा, "पतरस क्या तू मुझे वास्तव में प्रेम करता है? तीन बार यीशु ने पतरस से एक ही सवाल पूछा और तीनों बार उसने पतरस को करने के लिए एक ही काम दिया, अर्थात " मेरी भेड़ों का चरा और उनकी रखवाली कर।" यीशु पतरस की प्रमुख जरूरत को जानते थे। पतरस ने यीशु की मृत्यु से पूर्व तीन बार उसका इनकार किया था। पतरस को क्षमा और यीशु के साथ उसके रिश्ते में बहाली की आवश्यकता थी। यीशु ने व्यक्ति जरूरत में पतरस की मदद करने के लिए पहल की। यीशु ने पतरस को क्षमा किया तथा उसके साथ रिश्ता बहाल करके उसे अपना चेला और प्रेरित बना लिया। व्यक्तिगत तौर पर सहायता करने का एक और पहलू व्यक्ति के निजी मामलों में सहायता करना है।

3. व्यक्ति तौर पर सहायता करने का व्यवहारिक पहलू।

(1) निजी सहायता के दौरान दावा करना, समझाना और शिक्षा देना।

पढ़ें कुलुस्सियों 1:28-29।

खोजें और चर्चा करें। पौलुस की व्यक्तिगत सहायता में कौन कौन सी चीजें शामिल थीं?

ध्यान दें। पौलुस कहता है,"जिसको प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं, और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है, तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।" पौलुस हर एक व्यक्ति के साथ ऐसा ही करना चाहता था। पौलुस की व्यक्तिगत सहायता में निम्नलिखित बातें शामिल थीं।

पौलुस ने हर एक जन को यीशु मसीह का सुसमाचार **प्रचार किया।** उसने खुलेआम यह प्रचार (Greek: kataggelomai) किया कि यीशु मसीह ही एकमात्र उद्धारकर्ता और प्रभु है। जब कोई अनुभवी या पुराना मसीही नये विश्वासी को आत्मिक रूप से बढ़ने में सहायता कर रहा हो तो, वह उसे केवल और केवल यीशु मसीह को ही उद्धार और परिपक्वता के स्रोत, उद्धार और परिपक्वता का मध्यस्थ और उद्धार और परिपक्वता के लक्ष्य के रूप में प्रचार करना चाहिए(रोमियों 11:36)। निश्चय तौर पर, दोनो विश्वासी किसी भी ऐसे विषय पर चर्चा कर सकते हैं जो नये विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण हो,उदाहरण के लिए मानवीय विचारों पर शास्त्रियों का प्रभाव। लेकिन यीशु से सम्बन्धित सुसमाचार से लोगों को उद्धार मिलता और मसीही की समानता प्राप्त होती है दर्शन से नहीं(1कुरिन्थियों 20:25)।

पौलुस ने हर एक जन को **समझाया।** ग्रीक भाषा में "समझाने" का अर्थ उसे शिक्षा, निन्दा करने ,चेतावनी, अनुरोध करने (उकसाने) और प्रोत्साहित करने के द्वारा किसी मनुष्य के मन में मूल तस्वीर को छाप देना है।

- कुरिन्थियों 5:20 में वह लोगों से निवेदन करता है कि वे परमेश्वर से मेल कर लें।
- प्रेरितों 20:30 में वह कहता है कि उसने इफिसुस के प्राचीनों को रात और दिन आंसू बहा बहा कर चितौनी देना न छोड़ा।
- 1 थिस्लुनिकियों 2:7, 11-12 में, पौलुस की व्यक्तिगत सहायता को सुन्दर ढंग से सारांशित किया गया है "जिस तरह माता अपने बालकों का पालन पोषण करती है वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रह कर कोमलता दिखाई है। जैसे तुम जानते हो, कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही हम तुम में से हर एक को भी उपदेश करते, और शान्ति, और समझाते थे। कि तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।

पौलुस ने हर एक जन को **शिक्षा दी।** ग्रीक भाषा में "शिक्षा देने" का अर्थ बाइबल के सच्चाईयों या मूल्यों को किसी जन को क्रमश: व व्यवहारिक रूप में बताना।
निम्नलिखित बातों के बीच के कोई खास फरक नहीं है:

- मसीहियों को क्या विश्वास करना चाहिये से सम्बन्धिक सिद्धान्तों और शिक्षाओं में।
- मसीहियों को कैसे व्यवहार करना चाहिए के सम्बन्ध में उसकी सलाह और आचार विचार
- पॉलुस लोगों को समझाते हुए शिक्षा देता था और उसका समझाना उसके सिद्धान्तों अर्थात मूल्यों पर आधारित होता था।

इसलिए पौलुस ने मसीह का यह होने का दावा किया:

- पापों से छुड़ाने वाला
- परमेश्वर जिसकी आज्ञा मानी गयी
- अनुसरण किया गया आदर्श।

हालांकि हकीकत तो यह है कि जो लोग यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं उन्हीं के लिए मसीह एक उदाहरण हो सकता है। जब गैर मसीही लोग यीशु मसीह की प्रसशां करते, लेकिन उसे अपना उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार नहीं करते, उन्हें उनके पापों की बन्धुवाई से आजादी प्राप्त नहीं होती और उन्हें पवित्र आत्मा भी प्राप्त नहीं होती जो उन्हें यीशु मसीह के समान बनने में मदद करता है।

(2) शिक्षा देने और समझाने के बीच सम्बन्ध

पौलुस समझाते हुए हमेशा अपनी शिक्षाओं को मसीह की व्यक्तित्व व कार्यो से जरूर जोड़ता है।
खोजें व चर्चा करें। इस बाइबल खण्ड में पौलुस लोगों को क्या समझाता और क्या शिक्षा प्रदान करता है?

- ***पढ़ें*** रोमियों 15:2-3। पौलुस सिखाता है कि,"मसीह ने कभी अपने आप को प्रसन्न करने का प्रयास नहीं किया।"
  इसलिए वह समझाता है,"हम में से हर एक को अपने पड़ोसी को प्रसन्न रखना चाहिए।"
- ***पढ़ें*** इफिसियों 5:2. वह शिक्षा देता है,"परमेश्वर ने हम से प्रेम किया और हमारे खातिर अपनी कुर्बानी दे दी"।
  इसलिए वह समझाता है कि, "प्रेम से भरा हुआ जीवन जियो (प्रेम में चलो)।"

- ***पढ़ें*** कुलुस्सियों 3:13। पौलुस शिक्षा देता है, "परमेश्वर ने आपको क्षमा कर दिया है।" इसलिए वह उन्हें समझाता है कि,"एक दूसरे को क्षमा करो।"

पौलुस ने "सारी बुद्धि" के साथ लोगों में प्रचार किया, उन्हें शिक्षा प्रदान की और उन्हें समझाया। और "बुद्धि" का अर्थ है कि अपने सर्वोच्च लक्ष्य तक पहुंचने के लिए सबसे बेहतर उपाय या तरीके का इस्तेमाल करना। इसका अर्थ सही जानकारी का सही समय पर सही तरीके से सही व्यक्ति पर सही परिस्थितियों में प्रयोग करना है।

(3) एक दूसरे की ज़िम्मेदारी।

खोजें व चर्चा करें। वे कौन सी व्यक्गित सहायता हैं जिन्हें हर मसीही जन कर सकता है और उसे 6+देना चाहिए?

पढ़ें गलातियों 6:2; 1 थिस्लुनिकियों 5:11; इब्रानियों 10:25।

ध्यान दें। बाइबल में हम बहुत सी जगहों पर मसीहियों की, एक दूसरे के प्रति "जिम्मेदारियों के बारे में" पढ़ते हैं। उदाहरण के लिए,

- एक दूसरे के बोझ को उठाना
- एक दूसरे को प्रोत्साहित करना
- एक दूसरे से प्रेम करने तथा भले काम करने के लिए अनुरोध करना।

परिपक्व मसीहियों को नये मसीहियों की व्यक्तिगत तौर पर सहायता करने के साथ साथ एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारियों को भी निभाना चाहिए।

4. व्यक्तिगत सहायता का उद्देश्य।

खोजें व चर्चा करें। सारी व्यक्तिगत या निजी सहायता का क्या उद्देश्य है?

पढ़ें कुलुस्सियों 1:28-29; 1 कुरिन्थियों 1:8-9; 3:5-7; फिलिप्पियों 1:6।

ध्यान दें। व्यक्तिगत सहायता का उद्देश्य नये मसीहियों को आत्मिक परिपक्वता में बढ़ौत्तरी करने तथा मसीह की कलीसिया में कार्य करने में सहायता करना है।

यह "सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाना है कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध (ग्रीक: टेलेइयोस)करके उपस्थित करें। " टेलेइयोस" शब्द का अर्थ "मंजिल" हो सकता जिसे हम समय या "सिद्धता" की श्रेणी से माप सकते हैं।

(1) अगर हम समय के सन्दर्भ में बात करें तो "टेलेइयोस" का अर्थ "अन्त तक" हो सकता है।

1 कुरिन्थियों 1:8 में, पौलुस कहता है,"वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ करेगा।" परमेश्वर का कार्य मसीह के जीवन में अन्त तक बना रहेगा, अर्थात, मसीह के द्वितीय आगमन तक! परमेश्वर विश्वासयोग्य है और वह विश्वासयोग्यताओं के साथ उन बातों को पूरा करेगा जिनकी उसने प्रतिज्ञा की है।

(2) श्रेणी के सन्दर्भ में बात करें तो "टेलेइयोस" शब्दा का अर्थ "निर्दोष, सम्पूर्ण, परिपक्व और सिद्ध" होता है।"

एक मसीही जन के जीवन में परमेश्वर के काम उसे परिपक्व, सम्पूर्ण और निर्दोष बनाते हैं। व्यक्तिगत सहायता करने में बहुत समय,शक्ति और संघर्ष लगता है। फिर भी, परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की है कि वह इसे सफल बनाएंगे। यह मसीहियों के लिए एक अद्भुत आश्वासन है। हालांकि कभी कभी ऐसा प्रतीत होता

है कि एक मसीही कभी परिपक्व या निर्दोष नहीं हो पाएगा, लेकिन परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि मसीह के द्वितिय आगमन पर, हर एक मसीही जन पूरी तरह से परिपक्व और पूरी तरह से निर्दोष हो जाएगा!

मसीही कार्यकर्ताओं को भी लक्ष्य वही है जो परमेश्वर का है। 1 कुरिन्थियों 3:6 में पौलुस कहता है, "मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।" परमेश्वर परिपक्व मसीहियों की सहायता से नये विश्वासियों को बढ़ाने में मदद करते हैं, लेकिन परमेश्वर स्वयं बढ़ाने वाले या बढ़ौत्तरी को सीमित करने वाले हैं। 1 कुरिन्थियों 3 में देखते हैं तो पाते हैं कि, पॉलुस ने कुरिन्थियों में प्रचार किया,अपुल्लोस ने उन्हें शिक्षा प्रदान की। लेकिन परमेश्वर ने ही उनकी सेवाकाई को सार्थक किया:परमेश्वर ने ही उन्हें नये जन्म की आशीष दी और उन्हें परिपक्व और सक्रिय मसीही बनाया। और परमेश्वर ने जिन भले कामों को उन में प्रारम्भ किया है वह उन्हें अपने दूसरे आगमन तक लगातार करता रहेगा(फिलिप्पियों 1:6)। तब वे पूरी तरह से सिद्ध हो जाएगें।

ख. व्यक्तिगत सहायता के तत्व

परिचय। जब आप किसी मसीही जन की व्यक्ति तौर पर सहायता करना चाहते हैं, तो आप निम्नलिखित पांच व्यवहारिक कदमों का अनुसरण कर सकते हैं।

कदम 1. नये मसीही विश्वासियों के लिए प्रार्थना करें।

खोजें व चर्चा करें। जब आप किसी मसीही जन की व्यक्तिगत तौर पर कुछ मदद करते हैं, तो आप उसकी उपस्थिति में उसके लिए क्या प्रार्थना कर सकते हैं?

- ***पढ़ें*** यूहन्ना 6:44। परमेश्वर का उसे मसीह के नज़दीक लाने तथा उसका उद्धार करने के लिए धन्यवाद करें।
- ***पढ़ें*** कुलुस्सियों 1:2-14। एक मसीही के रूप में उसमें होने वाली प्रगति के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें। उसके विश्वास,प्रेम और आशा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें। उन मसीहीयों के लिए भी परमेश्वर का धन्यवाद दें जिसने उन्हें सुसमाचार सुनाया और जो उसकी बढ़ने में सहायता कर रहे हैं। आप कुलुस्सियों 1:9-12 में दी गयी कुलुस्सियों की कलीसिया के लिए पौलुस की प्रार्थना को उस जन की बढ़ौत्तरी,उसके जीवन, कलीसिया के साथ उसके सम्बन्ध और कलीसिया में उसकी सेवा के लिए उसका धन्यवाद दे सकते हैं। इस प्रार्थना में,पौलुस उनके ज्ञान, व्यवहार, बढ़ौत्तरी और सेवा के लिए प्रार्थना करता है।
- ***पढ़ें*** लूका 22:31-32। यीशु के समान, आप भी उसकी व्यक्तिगत ज़रूरतों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।
- ***पढ़ें*** मत्ती 6:9-10। प्रार्थना करें कि वह बाइबल से परमेश्वर की इच्छा को जान सके, प्रार्थना करें कि व पवित्र आत्मा की सहायता से मसीह को उसके जीवन को नियन्त्रित करने की अनुमति प्रदान करे, और मसीह को उसके जीवन में महिमा मिलने पाए। अपने आप से पूछें, "कि मैं उसकों प्रोत्साहित करने के लिए कैसी प्रार्थना कर सकता हूँ?

कदम 2. अपनी प्रगति को एक दूसरे के साथ न बांटें।

खोजें और चर्चा करें। जब आप नये मसीहियों की मदद करते हैं, तो आप उनके साथ किन किन बातों और चीज़ों को बांट सकते हैं?

- ***ध्यान दें।*** अपने जीवन की प्रगति और संघर्षों को एक दूसरे के साथ साझा करें। एक दूसरे को उत्साहित करें। पुराने मसीही भी अपनी बढ़ौत्तरी व प्रगति को मसीहियों के साथ साझा कर सकते हैं,ताकि नये मसीही लोग उनके आदर्शों का अनुसरण कर सकें।
- ***पढ़ें*** 1 तीमुथीयुस 4:15। एक दूसरे को उन कामों के बारे में बताएं जिन्हें आप बढ़ोत्तरी या प्रगति करने के लिए प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आप उनको बता सकते हैं कि बीते सप्ताह में आपने बाइबल के अध्ययन और परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने पर क्या सीखा। आप एक दूसरे को पिछले सप्ताह सीखे हुए बाइबल पदों को सुना सकते हैं। आप आपस में साझा कर सकते हैं कि आपके परिवार, विवाह और कार्यों में क्या चल रहा है। कलीसिया और परमेश्वर के राज्य में अपनी सेवा के बार में चर्चा कर सकते हैं।
- ***पढ़ें*** रोमियों 1:12। यह हमें सिखाता है कि, "हमें आपस में एक दूसरे के विश्वास से उत्साहित होना चाहिए।" एक दूसरे को अपने विश्वास की बातें बताने के द्वारा प्रोत्साहित करे। उदारहण के लिए, बाइबल की एक प्रतिज्ञा को साझा करें। किसी ऐसी बात या घटना की चर्चा करें जिसके द्वारा परमेश्वर ने आपके विश्वास को उभारा हो। आपस में बाटें कि भविष्य के लिए आपका दर्शन और योजनाएं क्या हैं और भविष्य की उन योजनाओं के लिए आप परमेश्वर पर किस प्रकार निर्भर हैं। अपने आप से प्रश्न करें कि "मैं किस तरह से उसकी प्रगति को उभार सकता व उसके विश्वास को प्रेरित कर सकता हूँ?"

कदम 3. परमेश्वर के वचन की शिक्षा दें।

खोजें व चर्चा करें। नये विश्वासियों की व्यक्तिगत तौर पर सहायता करते हुए, आप उन्हें किन बातों की शिक्षा प्रदान कर सकते हैं?

- ***ध्यान दें।*** उसकी बाइबल को जानने तथा बाइबल को समझने में सहायता करें। यीशु ने अपने महान आदेश में कहा,"चेले बनाओ.....और जो कुछ मैंने तुम्हें आज्ञा दी है उन्हें भी मानना सिखाओ।"
- ***पढ़ें*** फिलिप्पियों 4:9। एक विशेष विषय पर बाइबल अध्ययन करें। उसे शिक्षा देने व प्रशिक्षित करने के लिए शिष्यता पाठयक्रम के किसी भी हिस्से का इस्तेमाल करें(उदारहण के तौर पर, www.dota.net or www.deltacourse.org)। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप एक दूसरे की बाइबल के शिक्षाओं को व्यक्तिगत तौर पर समझने तथा उसे अपने जीवन में इस्तेमाल करने में सहायता करें।
- ***पढ़ें*** 2 कुरिन्थियों 13:10। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि आप नये विश्वासियों की कमज़ोरियों पर चर्चा करने की बजाय उसकी क्षमता या शक्तिशाली क्षेत्रों पर ज्यादा ध्यान दें। उदाहरण के तौर पर, यदि वह विश्वासी बाइबल अध्ययन करने में अच्छा और वचन याद करने में कमज़ोर है तो उसको बाइबल अध्ययन करने के लिए प्रशिक्षित करें और जो भी थोड़ी बहुत प्रगति वह वचनों को याद करने में करता है उसके लिए उसे सराहें। उसकी कमजोंरियों पर ध्यान केन्द्रित न करें, क्योंकि ऐसा करने से वह असुरक्षित महसूस करेगा और किसी भी प्रकार की गलती करने या असफलता से डरेगा। वरन आप एक प्रोत्साहक बनें। किसी नये विश्वासी को बाइबल अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करते समय, अपने आप से प्रश्न करें,"कि वह किन क्षेत्रों में सक्षम है और मैं उसकी किस प्रकार उन्नति करने में सहायता कर सकता हूँ? मैं कैसे एक प्रोत्साहक बन सकता हूँ?

कदम 4. उसके व्यक्तिगत प्रश्नों पर चर्चा करें।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह ने अपने चेलों के प्रश्नों का उत्तर किस प्रकार से दिया?

- ***पढ़ें*** मत्ती 19:3-6। कई बार यीशु मसीह ने बाइबल में लिखे वचनों का हवाला देकर लोगों के प्रश्नों का उत्तर दिया। उसने लोगों को याद दिलाया कि परमेश्वर ने क्या कहा है और फिर उसने अपने उत्तर को उस बार पर आधारित कर दिया।
- ***पढ़ें*** लूका 10:25-26। अन्य समयों में यीशु मसीह ने उनके प्रश्नों का जवाब पलटकर प्रश्न करने के द्वारा दिया। उसने उनसे पूछा वे क्या जानते हैं बाइबल उनके प्रश्न के सन्दर्भ में उनसे क्या कहती है। यदि वे सही जवाब देते थे तो वह उनकी तारीफ करता और उनसे उन शिक्षाओं को अपने व्यक्तिगत जीवन में लागू करने के लिए कहा करता था।

यदि आप किसी नये मसीही की सहायता करते हैं, तो उसे प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करें। उसके प्रश्नों को ध्यान से सुने,उसके सम्बन्ध में उससे प्रश्नों को पूछें और उसके जवाब को सुनें।

और यदि आप उसको सलाह दे रहे हैं, तो निम्नलिखित कामों को कर सकते हैं:

- बेहतर रहेगा कि आप उसे अपने उत्तर और अपने विचार न बताएं, क्योंकि आपके विचार और आपके उत्तर आपकी प्रतीति या दृढ़ विश्वास और आपका अनुप्रयोग है, उसका नहीं।
- यह ज्यादा बेहतर रहेगा कि आप उसे बाइबल में से स्वयं अपना जवाब खोजने दें और उससे प्राप्त प्रकाशन को अपने जीवन में इस्तेमाल करने के लिए कहें। आप उसे किसी बाइबल खण्ड का सुझाव दे सकते हैं लेकिन उसे अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं ढूंढ़ने दें। जब कोई मसीही बाइबल में से किसी सत्य को अपने आप खोजता है तो वह उसका मत या प्रतीति बन जाती है। वह उस शिक्षा को जल्दी नहीं भूलेगा। अपने आप से पूछें कि, "बाइबल का कौन सा अंश उसकी अपने प्रश्न (समस्या) का उत्तर खोजने में ज़्यादा मदद करेगा।"?

कदम 5. मिलकर प्रार्थना करें।

सिखाएं। अन्त में साथ मिलकर प्रार्थना करें। नये विश्वासी से पहले प्रार्थना करने तथा बाद में उस दिन परमेश्वर द्वारा सिखाई गयी बातों के विषय में प्रतिउत्तर देने के लिए कहें। वह उस व्यक्तिगत सहायता के समय उन बातों के विषय में प्रार्थना करेगा जो वास्तव में उसके लिए सार्थक थीं। उसकी प्रार्थना से आपको यह जानने में मदद मिल जाएगी कि परमेश्वर उसके जीवन में क्या कर रहे हैं, ताकि आप उसके लिए लगातार प्रार्थना व व्यक्तिगत तौर पर उसकी सहायता कर सकें।

पुराने मसीही होने के नाते आपको भी परमेश्वर से प्रार्थना करती व उस दिन परमेश्वर द्वारा सिखायी गयी बातों के प्रति प्रतिउत्तर देना चाहिए। बाद में जब नया मसीही बढ़ोत्तरी कर लेता है,तो आप दोनों मिलकर अपने परिवार वालों, मित्रों और सहकर्मियों तथा अन्य लोगों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं, ताकि वे भी सच्चाई को जानकर उद्धार पा सकें।

ग. व्यक्ति सहायता के लिए व्यवहारिक सुझाव

1. आप किसे व्यक्तिगत सहायता दे सकते हैं?

खोजें व चर्चा करें। व्यक्तिगत सहायता किसे दी जानी चाहिए?

ध्यान दें। हर मसीही कार्यकर्ता के पास सीमित समय होता है, इसलिए कोई भी जन अपनी देखभाल में रहने वाले हर सदस्य को नियमित तौर पर निजी सहायता प्रदान नहीं कर सकता। इस कारण, पुराने या परिपक्व मसीहीयों ने विशेष तौर पर उन लोगों की मदद करनी चाहिए जिन्हें बहुत ज़्यादा ज़रूरत हो।

(1) जो लोग व्यक्तिगत समस्याओं और प्रश्नों से संघर्ष कर रहे हों।

पढ़ें *1* थिस्लुनिकियों 5:14। यह हमें सिखाता है कि,"जो ठीक चाल नहीं चलते, उन को समझाओ,कायरों को ढांढस दो, निर्बलों को संभालो और सब की ओर सहनशीलता दिखाओ।" आपको व्यक्तिगत तौर पर उन लोगों की मदद करनी चाहिए जो व्यक्तिगत समस्याओं से संघर्ष कर रहे हैं या जिसके पास व्यक्गित प्रश्न हो जिन पर वह आपके साथ चर्चा करना चाहते हैं।

(2) जो सभाओं से दूर रहते या पिछड़ जाते हैं।

पढ़ें इब्रानियों 10:25। यह सिखाता है कि,"हम एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जेसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उन दिन को निकट आते देखें, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करें। एक पुराने और परिपक्व मसीही को उन लोगों की सहायता करनी चाहिए जो सभाओं से दूर रहते या पिछड़ जाते हैं या जिन्हें किसी विशेष बाइबल अध्ययन या अध्याय को समझने में सहायता की जरूरत होती है।

(3) जो लोगे विश्वासयोग्य, ग्रहण करने वाले और शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हैं।

पढ़ें 2 तीमुथीयुस 2:1-7। पौलुस तीमुथीयुस से अनुरोध करता है:

- कि वह उस अनुग्रह से बलवन्त हो जाए, जो मसीह यीशु में है।
- जो बातें उसने पौलुस से सीखी है वह उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरो को भी सिखाने के योग्य हों।
- कि वह यीशु के अच्छे योद्धा की नाई दु:ख उठाए।
- केवल अपने भरती करने वाले अधिकारी अर्थात मसीह को प्रसन्न करने का प्रयास करे।
- एक धावक के समान बाइबल के नियमों के अनुसार अपनी दौड़ को पूरा करे।
- और एक किसाने के समान परमेश्वर के राज्य में परिश्रम करे।

पुराने और परिपक्व मसीहियों ने उन लोगों को व्यक्तिगत सहायता प्रदान करनी चाहिए जो विश्वासयोग्य, शिक्षा को ग्रहण करने वाला और अधिक जानकारियों और प्रशिक्षण को प्राप्त करने के लिए जिज्ञासु हो।

2. आपको कब व्यक्तिगत सहायता देनी चाहिए?

सिखाएं। व्यक्तिगत मदद कब देनी चाहिए? यह आपकी परिपक्वता, क्षमता,उपलब्धता और दूसरो को प्रशिक्षित करने की इच्छा और परमेश्वर द्वारा आपको प्रदान की गयी बुलाहट पर निर्भर करता है। लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप नये मसीहियों के जीवन से कितना जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, यदि उस व्यक्ति से मिलने वाले आप इकलौते मसीही हैं तो आपको उसके साथ मिलकर उपरोक्त 5 कदमों के पर काम करने के लिए प्रतिदिन 1½ से 2 घण्टे मिलना चाहिए।

लेकिन यदि नया मसीही जन पहले से ही कलीसिया की सभा, घरेलू सभा या शिष्यता समूह में जाता है तो जब कभी उसे या आपको लगे कि मिलना ज़रूरी है तो आप आपस में मिल सकते हैं।

3. आप किस प्रकार से दूसरों की व्यक्तिगत तौर पर मदद कर सकते हैं?

पढ़ें मत्ती 20:25-28; लूका 22:24-27; इब्रानियों 10:24-25।

खोजें व चर्चा करें। व्यक्ति सहायता किस तरह से दी जानी चाहिए?

ध्यान दें। यीशु ने हमें शिक्षा दी है कि पुराने और परिपक्व मसीह नये मसीहियों पर प्रभुता नहीं कर सकते हैं, क्योंकि ऐसा अन्यजातियों में होता है। वह नहीं चाहता कि कोई मसीही जन अन्य किसी नये मसीही पर प्रभुता करे। मसीही सेवक दूसरों को कुछ विशेष कामों को करने के लिए किसी पर ज़ोर ज़बरजस्ती नहीं कर सकते, लेकिन वह उसे सिखा सकते, चेतावनी दे सकते और प्रोत्साहित कर सकते हैं। "आईये हम विचार करें कि हम प्रेम(सम्बन्धों में) करने व भले काम करने (सेवाकाई)में एक दूसरे को कैसे प्रेरित कर सकते हैं।" व्यक्तिगत सहायता प्रोत्साहन तथा एक दूसरे की उन्नति को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. "व्यक्तिगत सहायता द्वारा नये मसीहियों को प्रशिक्षण देना " पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। पुराने और परिपक्व मसीहियों को नये विश्वासियों की सहायता करने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 18:18-21:38** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। श्रंखला छ: "मसीही विवाह" का पुनरावलोकन। (1) छोड़ना और बने रहना। उत्प.2:24. (2) प्रेम और अगुवाई करें। इफिसियों 5:23,25, (3) प्रेम और अधीनता। तीतुस 2:4-5, (4) झगड़ों को सुलझाना। मत्ती 5:23-24 (5) विश्वासयोग्य बने रहना। नीतिवचन 3:3-4।
5. बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 13 के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।